भारत का भौतिक प्रदेश-1

Physiography of India-1

बोलेन्द्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक भूगोल,
राजा सिंह कॉलेज सिवान

भारत विविधताओं का देश है । यहां की भू-आकृति में पर्वत, पठार तथा मैदान का विकास हुआ है । यह संरचना, प्रक्रिया और विकास की अवस्था का परिणाम है । मुख्य रूप से भारत को निम्नलिखित भौतिक प्रदेशों में बांटा जा सकता है:

1. उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी पर्वतमाला
2. उत्तरी भारत का मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. भारतीय मरुस्थल
5. तटीय मैदान
6. द्वीपसमूह

उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी पर्वतमाला

इसमें हिमालय तथा उत्तर-पूर्व की पहाड़ियां शामिल है । हिमालय पर्वत पश्चिम में सिंधु नदी गोर्ज लेकर पूर्व में दिहांग गोर्ज तक तलवार के चाप की भांति 2500 किमी में विस्तृत है । इसकी चौड़ाई लगभग 150 से 400 किमी है । यह विश्व की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला है । वास्तव में हिमालय कोई एक पर्वत नहीं बल्कि एक दूसरे से लगभग समांतर रूप में फैली हुई तीन पर्वतमालाए हैं ।

I. बृहत हिमालय या महान हिमालय या हिमाद्री (Greater Himalaya)
II. लघु हिमालय या मध्य हिमालय या हिमाचल (Lesser Himalaya)
III. बाह्य हिमालय या शिवालिक (Outer Himalaya)

I. बृहत हिमालय या महान हिमालय या हिमाद्री (Greater Himalaya)

यह हिमालय पर्वत की सबसे ऊंची श्रेणी है । इसकी औसत ऊंचाई 6000 मीटर तथा चौड़ाई 25 किमी है । विश्व की उच्चतम चोटियां इस श्रेणी में स्थित है । प्रमुख चोटियां निम्नलिखित हैं:

पर्वत चोटियाँ	**ऊंचाई (मी०)**
एवरेस्ट	*8848*
कंचनजंगा	*8598*
मकालू	*8481*
धौलागिरी	*8172*
नागा पर्वत	*8126*
अन्नपूर्णा	*8078*
नंदा देवी	*7817*
नामचा बरवा	*7756*

अधिक ऊंचाई के कारण बृहत हिमालय हमेशा बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री के नाम से भी पुकारा जाता है । II.

चित्र स्रोत: https://www.mapsofindia.com/maps/india/physical-map.html

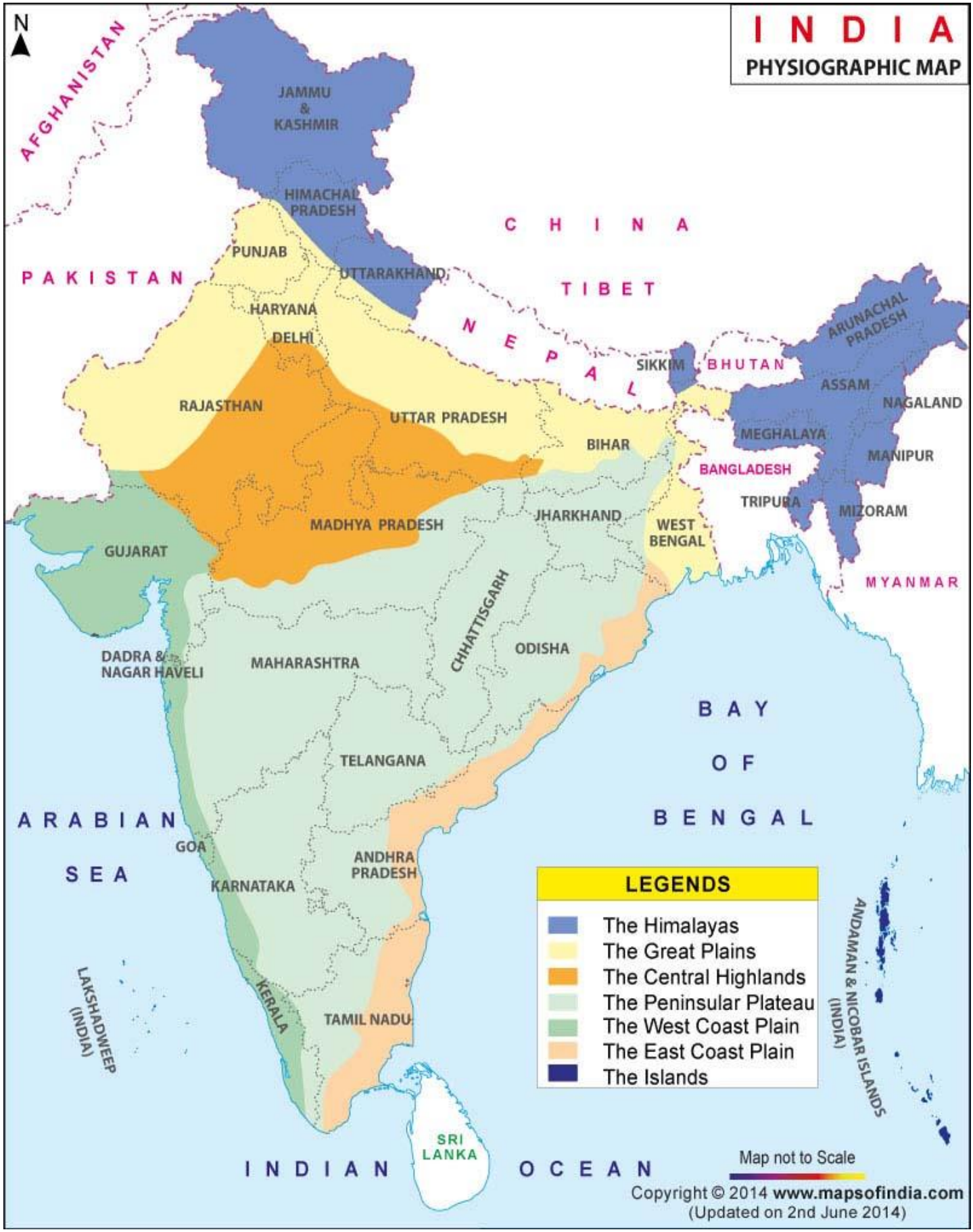

चित्र स्रोत: https://www.mapsofindia.com/maps/india/physiographic.htm

लघु हिमालय या मध्य हिमालय या हिमाचल (Lesser Himalaya)

यह महान हिमालय के दक्षिण में लगभग उसके समांतर पूर्व-पश्चिम दिशा में विस्तृत है । इसकी औसत चौड़ाई 80 किमी तथा ऊंचाई 3500 से 4500 मीटर है । इसकी कई शाखाएं हैं जैसे *पीरपंजाल* तथा *धौलाधार* । बृहत हिमालय तथा लघु हिमालय के बीच कई प्रसिद्ध घाटियां हैं जैसे *कश्मीर घाटी, काठमांडू घाटी* । भारत के अधिकांश हिल स्टेशन लघु हिमालय की दक्षिणी ढालों पर ही स्थित है जैसे *शिमला, मसूरी, डलहौजी, नैनीताल, दार्जिलिंग* आदि ।

III. बाह्य हिमालय या शिवालिक (Outer Himalaya)

हिमालय यह हिमालय का सबसे दक्षिणी श्रेणी है जो लघु हिमालय के समांतर पूर्व से पश्चिम फैली हुई है । इसकी औसत चौड़ाई 10 से 50 किमी तथा ऊंचाई 900 से 1200 मीटर है । यह श्रेणी कटा-फटा है । लघु हिमालय तथा बाह्य हिमालय के बीच कई घाटियां पाई जाती है जिन्हें पश्चिम में दून तथा पूर्व में दुआर कहा जाता है जैसे देहरादून, पतलीदून आदि ।

मुख्य हिमालय के अतिरिक्त कुछ शाखाएं भी हैं जैसे

उत्तर-पश्चिम शाखाएं: ये शाखाएं सिंधु नदी से परे उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम दिशा में विस्तृत है । इनमें हजारा, सुलेमान, बुगती, किरथर तथा मेकसन सम्मिलित हैं ।

लद्दाख के उत्तर-पूर्व में काराकोरम पर्वत श्रेणी है । इसकी औसत ऊंचाई 6000 मीटर है । इस की सबसे ऊंची पर्वत चोटी का नाम K_2 है जिसकी ऊंचाई 8611 मीटर है । यह भारत की सबसे ऊंची चोटी है ।

उत्तर-पूर्वी शाखाएं: असम के उत्तर-पूर्व में हिमालय पर्वतमाला ब्रह्मपुत्र नदी को पार करके दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ गई हैं । यह हिमालय की पूर्वी शाखाएं हैं । यह भारत-म्यानमार के बीच अंतरराष्ट्रीय सीमा बनाती है । इसमें कई श्रेणियां हैं जैसे पटाकोई, मणिपुर, मिजो, गारो, खासी, जयंतिया, लुशाई आदि ।

हिमालय पर्वत के कई क्षेत्रीय विभाग या भू-आकृति खंड हैं जैसे

I. कश्मीर या उत्तर-पश्चिम हिमालय
II. हिमाचल और उत्तराखंड हिमालय
III. दार्जिलिंग और सिक्किम हिमालय
IV. अरुणाचल हिमालय
V. पूर्वी पहाड़ियां और पर्वत

कश्मीर या उत्तर-पश्चिम हिमालय

कश्मीर हिमालय में अनेक पर्वत श्रेणियां हैं जैसे काराकोरम, लद्दाख, जास्कर और पीरपंजाल । कश्मीर हिमालय का उत्तर-पूर्वी भाग जो बृहत हिमालय और काराकोरम श्रेणियों के बीच स्थित है, एक ठंडा मरुस्थल है । बृहत हिमालय और पीरपंजाल के बीच विश्व प्रसिद्ध कश्मीर घाटी और डल झील है । यह भाग कई चीजों के लिए प्रसिद्ध है:

हिमानी: बाल्टरों, सियाचिन

करेवा: कश्मीर हिमालय में अनेक दर्रे जैसे करेवा चिकनी मिट्टी और दूसरे पदार्थों का हिमोढ पर मोटी परत के रूप में जमा है । यहां केसर की खेती होती है ।

दर्रे: बृहत हिमालय में जोजिला, पीरपंजाल में बनिहाल, जस्कर में फोटुला, लद्दाख श्रेणी में खारदुन्गला

मीठी झीलें: डल झील, वूलर झील

खारे पानी की झील: पैन्गोंग झील, सोमूरीरी झील

इस भाग में सिंधु तथा इसकी सहायक नदियां झेलम, चिनाव बहती हैं और इस क्षेत्र को स्वर्ग से सुंदर बनाती है । प्रमुख पर्यटक आकर्षण केंद्र हैं - वैष्णो देवी, अमरनाथ गुफा, चरार-ए-शरीफ इत्यादि ।

हिमाचल और उत्तराखंड हिमालय

हिमालय का यह हिस्सा पश्चिम में रावी नदी और पूर्व में काली (घाघरा की सहायक नदी) के बीच स्थित है । इस प्रदेश में बहने वाली नदियां है रावी, ब्यास और सतलुज, यमुना, घाघरा । हिमाचल हिमालय का सुदूर उत्तरी भाग लद्दाख के ठंडे मरुस्थल का विस्तार है जो लाहौल और स्पीति जिले में स्थित है । हिमालय के तीनों मुख्य पर्वत श्रृंखलाएं बृहत हिमालय, लघु हिमालय और शिवालिक श्रेणी इस हिमालय खंड में स्थित है ।

प्रमुख हिलस्टेशन: धर्मशाला, मसूरी, कसौली, अल्मोड़ा, रानीखेत

क्षेत्र की दो महत्वपूर्ण प्रक्रिया शिवालिक और दून हैं ।

दून: चंडीगढ़-कालका का दून, नालागढ़ दून, देहरादून, हरिके दून, कोटा दून

वृहद हिमालय की घाटियों में खानाबदोश भूटिया प्रजाति के लोग रहते हैं जो ग्रीष्मकाल में *बुग्याल* (ऊंचाई पर स्थित घास के मैदान) में चले जाते हैं और शरद ऋतु में घाटियों में लौट आते हैं । प्रसिद्ध *फूलों की घाटी* भी इसी क्षेत्र में स्थित है । *गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब* इसी इलाके में स्थित है ।

दार्जिलिंग और सिक्किम हिमालय

इसके पश्चिम में नेपाल हिमालय और पूर्व में भूटान हिमालय है । यह छोटा परंतु हिमालय का महत्वपूर्ण भाग है । यहां तेज बहाव वाली तीस्ता नदी बहती है और कंचनजुंगा जैसी ऊंची चोटिया और गहरी घाटियां पाई जाती हैं । इन पर्वतों के ऊंचे शिखरों पर लेपचा जनजाति और दक्षिणी भाग में मिश्रित जनसंख्या, जिसमें नेपाली, बंगाली और मध्य भारत की जनजातियां शामिल है, पाई जाती हैं । यहां की प्राकृतिक दशाओं जैसे मध्यम ढाल, गहरी व जीवाश्मयुक्त मिट्टी, संपूर्ण वर्ष वर्षा का होना और मंद शीत ऋतु का फायदा उठाकर अंग्रेजों ने यहां चाय के बागान लगाएं । बाकी हिमालय से यह क्षेत्र भिन्न है क्योंकि यहां दुआर स्थलाकृति आ पाई जाती है जिनका उपयोग चाय बागान के लिए किया जाता है और दार्जिलिंग हिमालय अपने रमणीक सुंदरता, प्राणी जात, बनस्पति जाति के लिए प्रसिद्ध है ।

अरुणाचल हिमालय

यह क्षेत्र भूटान हिमालय से लेकर पूर्व में दिफू दर्रे तक फैला है । इस पर्वत श्रेणी की सामान्य दिशा दक्षिण-पूर्व से उत्तर पूर्व है । क्षेत्र की प्रमुख चोटियों में कान्गतु और नमचा बरवा शामिल है । यह पर्वत श्रेणियां उत्तर से दक्षिण दिशा में बहती हुई और गहरे गोर्ज बनाने वाली नदियों द्वारा विच्छेदित होती हैं । नमचा बरवा को पार करने के बाद ब्रह्मपुत्र नदी एक गहरा गोर्ज बनाती है । कामेंग, सुबनसिरी, दिहांग, दिबांग और लोहित यहां की प्रमुख नदियां हैं । ये सदावाहिनी नदिया है जो बहुत से जलप्रपात बनाती है । इसलिए जल विद्युत उत्पादन क्षमता काफी है । इस हिमालय की एक मुख्य विशेषता है कि यहां बहुत सी जनजाति पश्चिम से पूर्व निवास करती हैं जैसे मोनपा, अबोर, मिशमी, निशी, और नागा । इसमें से ज्यादातर जनजातियां झूम कृषि करती हैं ।

पूर्वी पहाड़ियां और पर्वत

यह हिमालय के सुदूर पूर्व में स्थित पहाड़ियां तथा पर्वत है जिनकी दिशा उत्तर से दक्षिण की ओर है । यह विभिन्न भागों में विभिन्न नामों से जानी जाती हैं । उत्तर में यह पटकाई बूम, नागा पहाड़ियां, मणिपुर पहाड़िया और दक्षिण में भी मिजो या लुशाई पहाड़ियों के नाम से प्रसिद्ध है । इस पहाड़ी इलाके में अनेक जनजातियां रहती है जो झूम कृषि करती हैं । बराक मणिपुर और मिजोरम की एक मुख्य नदी है । मणिपुर घाटी के मध्य लोकतक झील स्थित है जो चारों ओर से पहाड़ियों से घिरी है । मिजोरम, जिसे मोलेसिस-बेसिन भी कहा जाता है, मृदुल और असंगठित चट्टानों से बना है । मिजोरम तथा मणिपुर की नदियां बराक नदी की सहायक नदियां है जो स्वयं मेघना नदी की सहायक नदी है । मणिपुर के पूर्वी भाग में बहने वाली नदियां चिन्द्विन नदी की सहायक नदियां है जोकि म्यान्मार में बहने वाली इरावदी नदी की एक सहायक नदी है ।

क्रमशः.....

- *सन्दर्भ: भारत का भूगोल: महेश बर्णवाल, सरस्वती भूगोल : डी आर खुल्लर, एनसीईआरटी, इन्टरनेट*